पंचम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

हमने लेखक का संक्षिप्त जीवन परिचय देखा है। डॉ.शंकर शेषजी का परिवार एक समृध्द परिवार था। बचपनसे नाटक देखना उन्हें बहुत पसंद था इसीका परिणाम यह हुआ, कि वे हिन्दी के एक ख्यातकीर्त नाटककार बन गये। इस अध्यायमें, डॉ.शेषजी द्वारा जितने नाटक लिखे गये और जो प्राप्त है उनका संक्षिप्त परिचय दिया है। उनके नाटकका परिचय पाने के बाद यह तथ्य मेरे सामने आये, कि उन्होंने विभिन्न विषयोंपर नाटक लिखे हैं। विषयोंकी विविधता उनके नाटकोंकी प्रधान विशेषता मेरे हाथ लगी।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी के समस्याप्रधान नाटकोंकी संक्षिप्त रूपरेखा दे दी है। समस्या को प्रधान या केन्द्र मानकर जो नाटक लिखे जाते है वे समस्याप्रधान नाटक है। इब्सन और शॉ से प्रभावित होकर हिन्दी में बहुतसे समस्या प्रधान नाटक लिखे गये। इन नाटककारोंमें प्रमुख है उपेन्द्रनाथ अश्क, लक्ष्मीनारायण मिश्र। नारी की चिरंतन समस्याओंकी ओर मिश्रने अपना लक्ष केन्द्रित किया है। अश्क की नाटकोंमें आधुनिक पारिवारिक समस्याएँ नजर आती है। लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश आदि इस युगके प्रमुख नाटककार है। छायावादोत्तर कालमें सेठ गोविंददास हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद आदि महत्वपूर्ण नाटककार नजर आते है। स्वतंत्रता के बाद लिखे गये नाटकोंमें चंद्रगुप्त विद्यालंकार, विनोद रस्तोगी, नरेश मेहता, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, डॉ.शंकर शेष आदि प्रमुख नाटककार माने जाते है। समस्याओंका रूप कालानुरूप बदलता गया। लेकिन नाटकारोंने अपने कालमें नजर आनेवाली समस्याओंको प्रधानतासे चित्रित करनेका प्रयास किया है।

'फन्दी' नाटक के शिल्पपर विवेचन किया गया है। नाट्यशिल्प की दृष्टिसे फन्दी का अध्ययन करने के उपरान्त मेरे हाथ यह तथ्य लगा, कि शिल्प की दृष्टिसे फन्दी एक सफल नाटक है। पात्रानुकूल भाषा, सटीक संवाद, प्रवाहमय

कथोपकथन,वातावरण का सजीव चित्रण ' . फन्दी नाटक की शिल्पगत विशेषताएँ है। संक्षेपमें फन्दी यह शिल्प की दृष्टिसे अत्यंत सफल समस्याप्रधान नाटक है।

इस लघु शोध प्रबन्धका चतुर्थ अध्याय है" फन्दी "नाटक में चित्रित समस्याएँ। इस अध्यायमें फन्दी नाटकमें दिखाई देनेवाली विभिन्न समस्याओंका विवेचन किया है। इन समस्याओंका विवेचन करनेके उपरान्त मै जिस निष्कर्षतक पहुँच हुआ हूँ वह इसप्रकार है।

स्वेच्छा मौत की समस्याको लेकर लिखा गया हिन्दीका ' फन्दी ' यह शायद पहला नाटक होगा। समग्र नाटककी कथावस्तु मानो इसीलिए गुंथी है। अर्थ की समस्याको भी उन्होंने प्रधान रूपसे चित्रित किया हैं। अर्थ के अभाव मेंही फन्दीके परिवारकी दुर्गति हो गयी है। यहाँतक की उसके पास वकील देनेके लिए भी पैसे नहीं होते। असाध्य बीमारी की समस्या पर भी नाटककारने अपनी दृष्टि केन्द्रित की है। क्योंकि उसकालमें केन्सर जैसी बीमारीका कोई इलाज हो नही सकता था। शोषण की समस्या भी शेष ने इसमें चित्रित की है। इमानदार डॉक्टरोंका अभाव वर्तमानकालकी सबसे बडी सच्चाई है। इस समस्याको ओरभी नाटककारने अंगुली निर्देश किया है। इसके साथ बेरोजगारीकी समस्या, सदाचारी व्यक्तिके उसूल की समस्या,व्यसन की समस्या,महँगाई की समस्या,भ्रष्टाचार की समस्यापर भी शंकर शेष जी ने यत्रतत्र प्रकाश डाला है। निष्कर्षत: डॉ.शंकर शेष जी ने अपने ' फन्दी ' नाटकमें वर्तमान जीवनकी उपर्युक्त समस्याओंका चित्रण किया है।

फन्दी मेरी दृष्टिसे समस्याप्रधान नाटक है। आधुनिक कालमें मानवी जीवन अनेक समस्याओंसे भरा है। इतना ही नही तो मानवी जीवन ही एक महान समस्या एक प्रश्नचिन्ह है। उसपर यदि गरीब मनुष्य हो तो यह समस्याही अधिक भयानक रूप धारण करती है। और मानव जीवनको सत्य करने का कैसा प्रयत्न करती है यह इस नाटकमें दिखानेका प्रयत्न किया है। इनमें से प्रमुख समस्याएँ अर्थ

अभावके कारण निर्माण हुई है। कोई सामाजिक,पारिवारिक ,नैतिक समस्याएँ हैं। आजका मानव जीवन इन समस्याओंसे पुरा भरा है और मनुष्य जितना जितना इन समस्याओंको हल करना चाहता है उतना उतना उसमें किसप्रकार अधिक फसता है। यह फन्दी को लेकर मैंने दिखानेका प्रयत्न किया है। मेरी दृष्टिसे ऐसे फन्दी इस समाजमें घरघरमें दिखाई देते हैं। इस नाटकका फन्दी उनका प्रातिनिधिक रुप है। घरघरको ग्रसित करनेवाली ये समस्याएँ और उनका वास्तविक परिणाम इस नाटकमें डॉ.शेख जी ने दिखाया है।